विदेह | आलोचना-संस्करण

गजेन्द्र ठाकुर

समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–८७

नित नवल

सन्दीप कुमार साफी

‘बैशाखमे दलानपर’क पाँच खण्डक
साहित्यिक आ स्रोत-समीक्षात्मक अध्ययन

आत्मकथा | कविता | विहनि कथा
लघुकथा | विचार-बिन्दु

LXXXVII

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

गजेन्द्र ठाकुर

समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-८७ · LXXXVII

नित नवल सन्दीप कुमार साफी

'बैशाखमे दलानपर'क पाँच खण्डक
साहित्यिक आ स्रोत-समीक्षात्मक अध्ययन

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

विदेह · २०२७

विदेह | आलोचना-संस्करण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–८७ · LXXXVII

नित नवल सन्दीप कुमार साफी

‘बैशाखमे दलानपर’क पाँच खण्डक

साहित्यिक आ स्रोत -समीक्षात्मक अध्ययन

आत्मकथा · कविता · कथा · विचार

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

विदेह · २०२७

प्रकाशन-विवरण

ग्रन्थ-शृंखला : गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड–८७ · LXXXVII

समीक्षाधीन ग्रन्थ : नित नवल सन्दीप कुमार साफी

मूल समीक्ष्य कृति : ‘बैशाखमे दलानपर’ — सन्दीप कुमार साफी

उपशीर्षक : पाँच खण्डक साहित्यिक आ स्रोत-समीक्षात्मक अध्ययन

मूल समीक्षात्मक अध्ययनक लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

एहि खण्डक सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

प्रकाशकीय संस्था : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादकीय संस्करण : विदेह, २०२७

© 2027 Gajendra Thakur / Preeti Thakur

पुस्तक-विन्यास : ६ × ९ इञ्च; देवनागरी युनिकोड

समीक्षाक आधार आ सीमा

ई आलोचना गजेन्द्र ठाकुरक ‘नित नवल सन्दीप कुमार साफी’मे उपलब्ध पाँच अध्ययनक सम्पादकीय पुनर्पाठ अछि। ‘बैशाखमे दलानपर’क आत्मकथा, कविता, विहनि कथा, लघुकथा आ विचार-बिन्दु एकर विषय छथि। मूल पोथीक सम्पूर्ण संस्करणक स्वतंत्र सत्यापन एहि अध्ययनक आधार नहि अछि।

मूल कृतिक कथन, ठाकुरक व्याख्या आ एतयक सम्पादकीय विवेचन अलग राखल गेल अछि। निर्णयक आधार पाठ-साक्ष्य, कथनशिल्प आ प्रमाणक मर्यादा अछि।

विस्तृत विभाग-क्रम

प्रथम विभाग : ग्रन्थक स्वरूप आ सम्पादकीय अध्ययनक आधार

द्वितीय विभाग : आत्मकथाक सम्पादकीय पुनर्पाठ

तृतीय विभाग : कविताक लोक-संसार आ रूप-विवेचन

चतुर्थ विभाग : विहनि कथाक संवाद आ सामाजिक निर्णयन

पंचम विभाग : लघुकथाक अन्न, देह आ स्त्रीक स्वर

षष्ठ विभाग : विचार-बिन्दु आ न्याय-चिन्तन

सप्तम विभाग : पाँचू खण्डक अन्तर्वर्ती तुलनात्मक प्रश्न

अष्टम विभाग : समेकित सम्पादकीय निर्णय

सन्दर्भ-विवरण

प्रथम विभाग : ग्रन्थक स्वरूप आ सम्पादकीय अध्ययनक आधार

१. पाँच विधा, एक पोथी आ अनेक प्रकारक सामाजिक अनुभव

'नित नवल सन्दीप कुमार साफी' गजेन्द्र ठाकुरक पाँचटा विस्तृत आलोचनात्मक आलेखक संग्रह अछि। एहि आलेखसभक विषय साफीक 'बैशाखमे दलानपर'क आत्मकथा, कविता, विहनि कथा, लघुकथा आ विचार-बिन्दु खण्ड छथि। पहिल दृष्टिमे ई पाँच स्वतन्त्र विधागत इकाइ लगैत अछि; मुदा एकत्र पढ़लापर श्रमक मोल, भोजनक उपलब्धता, पारिवारिक निर्भरता, स्त्रीक स्थान, लोकविश्वास आ सामाजिक प्रतिष्ठाक एक जटिल संसार बनैत अछि। लेखकक प्रथम-पुरुष अनुभव, काव्यक सामूहिक आवाज, कथा-पात्रक संवाद आ विचार-रचनाक नैतिक प्रतिज्ञा परस्पर समीप आबैत छथि, किन्तु एक-दोसरामे विलीन नहि होइत।

पोथीक पाँच खण्ड पर केन्द्रित आलोचनात्मक श्रमक मुख्य उपलब्धि ई अछि जे परिचयात्मक टिप्पणीसँ आगाँ बढ़ि प्रत्येक विधाक अपन अलग रचना-विधानकेँ प्रश्न बनाओल गेल अछि। आत्मकथामे स्मृति आ साक्ष्यक सम्बन्ध, कवितामे चित्र आ लय, विहनि कथामे संक्षिप्त संवाद, लघुकथामे वस्तु आ दृश्य, आ विचार-बिन्दुमे नैतिक कथनक प्रमाण—पाँचू ठाम अलग कसौटी लागू होइत अछि। तें एहि सम्पादकीय पुनर्पाठक उद्देश्य सब अध्ययनकेँ एकहि प्रशंसात्मक निर्णयमे बदलनाइ नहि, बल्कि हुनकर तर्कक शक्ति, अन्तर्विरोध आ सीमा परखब अछि।

साफीक संग्रहक पहिल संस्करण २०१४ मे श्रुति प्रकाशन, दिल्लीसँ प्रकाशित भेल बताओल गेल अछि। उपलब्ध समीक्षात्मक संग्रहक प्रकाशन-विवरणमे २०२७ उल्लेखित अछि। साहित्यिक इतिहासक ई दू भिन्न समय—मूल कृतिक प्रकाशन आ ओकर परवर्ती आलोचनात्मक ग्रहण—अलग राखब आवश्यक अछि। मूल पुस्तकमे की कहल गेल, ओकर विषयेँ ठाकुर की तर्क प्रस्तुत करैत छथि, आ वर्तमान सम्पादकीय परीक्षण ओहि तर्कमे की जोड़ैत अछि, एहि तीन स्तरक स्पष्ट भेद समीक्षा-परम्पराक विश्वसनीयताक आधार बनैत अछि।

२. साक्ष्यक मर्यादा : पात्रक कथन, आलोचकक अनुमान आ अभिलेख

उपलब्ध पाँच आलेख पाठककेँ घटनासभक अनेक विवरण दैत अछि— बाल्यकालक श्रम, नेपाल-चण्डीगढ़ प्रवास, कविताक ऋतुचक्र, 'अन्ध विश्वास'क आरोप, 'ओगरबाह'क भूख आ 'राजा अओर परजा'क सामाजिक स्मृति। मुदा समीक्षा पढ़ैत काल हर वर्णनक प्रमाण-स्तर समान मानब उचित नहि। किछु बात मूल रचनाक प्रत्यक्ष कथनक रूपमे उपस्थित अछि; किछु आलोचक द्वारा तर्कसँ निकसल अर्थ अछि; किछु बात तुलनात्मक सिद्धान्तक सहारे उठाओल प्रश्न अछि। एहि अन्तरकेँ छिपेने प्रसिद्धि बढ़ि सकैत अछि, साहित्यिक समझ नहि।

उदाहरणतः साफीक आत्मकथामे जातिगत आत्मपरिचय, अन्नमे मजदूरी आ शिक्षा-प्रवासक अनुभव उपस्थित अछि। एहि तथ्यसभसँ शोषण आ अवसर-असमानताक सामाजिक संरचना पर विचार करब युक्तिसंगत अछि। मुदा बिना प्रत्यक्ष पाठ-साक्ष्य कोनो विशेष अपमान, हमला वा निषेधक दृश्य कल्पना कऽ जोड़नाइ उचित नहि। ठाकुरक आत्मकथा-विषयक अध्ययन अनेक स्थानपर ई सावधानी रखैत अछि। एही प्रकार कविताक बिम्बकेँ तुरन्त ऐतिहासिक घटना, आ निबन्धक लोकस्मृतिकेँ प्रशासनिक आँकड़ा मानल नहि जाए।

एहि खण्डक सम्पादकीय परीक्षा मूलतः गजेन्द्र ठाकुरक उपलब्ध विस्तृत अध्ययनसभक आलोचनात्मक पुनर्विचार अछि। एहि आधारपर एकरा साफीक समस्त मूल रचनाक स्वतन्त्र अभिलेखीय सत्यापनक पर्याय मानब उचित नहि। आलोचकक प्रश्न जँ प्रमाणक सीमाक भीतर स्पष्ट रहल, तँ लेखकक प्रतिष्ठा आ पाठकक विवेक दुनूक रक्षा होइत अछि। साहित्यक सामाजिक महत्त्व सिद्ध करबाक लेल असिद्ध दावाक आवश्यकता नहि।

३. 'पहिल दलित आत्मकथा' : ऐतिहासिक स्वीकार आ आलोचनात्मक सावधानी

साफीक आत्मकथा पर विदेहक आरम्भिक सम्पादकीय टिप्पणी मैथिली दलित जीवनलेखनक ऐतिहासिक प्रवेशक दावा करैत अछि। गजेन्द्र ठाकुरक अध्ययन एहि प्रकाशकीय महत्त्वकेँ दर्ज कऽ कृतिक साक्ष्यात्मक स्वर, जीवनक अभाव आ

भाषिक आत्मसम्मानक मूल्यांकन करैत अछि। ई महत्त्वपूर्ण भेद अछि। इतिहासमे 'पहिल' कहल जाएब एक ग्रन्थसूचीगत स्थापना अछि, जकरा लेल उपलब्ध-अनुपलब्ध साहित्य, पत्रिका, पूर्ववर्ती स्मृति-लेखन आ प्रकाशन-तिथिक व्यापक जाँच आवश्यक होइत अछि; व्यक्तिगत जीवनक कथनक कलात्मक महत्त्व दोसर प्रकारक कसौटी सँ सिद्ध होइत अछि।

कृतिपर ध्यान देबाक कारण मात्र क्रमांक नहि। धोबी समुदायसँ आयल एक व्यक्ति अपन जीवनक भाषिक अधिकार ग्रहण करैत छथि, पारिवारिक धुलाई-श्रमक अन्न आधारित प्रतिफल बतबैत छथि, बाल्यक शिक्षा आ रोजगारक द्वन्द्व लिखैत छथि आ मातृभाषाक प्रति अपन प्रतिबद्धता व्यक्त करैत छथि। एहि तरहें सार्वजनिक साहित्यक 'हम'क परिधि विस्तार पबैत अछि। ई साहित्येतिहासक एक वास्तविक प्रश्न अछि : के अपना विषयमे लिखबाक अधिकारी मानल जाइत छथि, आ ककर जीवन सामान्यतः दूसराक वर्णनमात्र बनि रहैत अछि?

तथापि इतिहासक नव प्रवेश आलोचनासँ मुक्त नहि होइत। जीवनक समयरेखा, घटनाक चुनल विस्तार, स्त्रीक आवाजक अनुपस्थिति आ दहेजक प्रसंगक असहजता पर प्रश्न उठेनाइ रचनाक सामाजिक महत्त्व घटबैत नहि; ओकर सौन्दर्यशास्त्रीय स्थान अधिक स्पष्ट करैत अछि। गजेन्द्र ठाकुरक मूल्यांकनमे ई दोहरी दृष्टि बारम्बार उपस्थित अछि, आ एहीमे एहि पाँच-खण्डीय अध्ययनक प्रामाणिक सम्भावना निहित अछि।

द्वितीय विभाग : आत्मकथाक सम्पादकीय पुनर्पाठ

४. आत्मपरिचयक अधिकार : नाम, जाति आ श्रमक सम्बन्ध

आत्मकथा खण्डक समीक्षामे साफीक 'हम' आरम्भसँ सामाजिक स्थितिसँ चिन्हित अछि। 'संदीप' आ 'किरण' नामक द्वैत, धोबी समुदायसँ सम्बन्ध, चारि भाइ-बहिनक परिवार आ माता-पिताक कपड़ा धोबाक श्रम एकहि व्यक्तित्वक अनेक पहचान प्रस्तुत करैत अछि। ठाकुर एहि नाम-व्यवस्थाकेँ सामाजिक संसारक संकेतक रूपमे पढ़ैत छथि। आत्मपरिचय एतय कुल-वर्णनमात्र नहि; ई

लेखकीय अधिकारक आरम्भ अछि। लेखक अपन समाजक परिचय दोसराक मुखसँ सुनबाक बदला स्वयं कहैत छथि।

समीक्षाक महत्त्वपूर्ण बिन्दु ई अछि जे जाति आ आर्थिक स्थिति यद्यपि परस्पर सम्बद्ध छथि, तथापि दूनू एकही शब्द नहि। धोबी व्यवसाय पुस्तैनी श्रमक पृष्ठभूमि दैत अछि; अनियमित पारिश्रमिक आ शैक्षिक बाधा आर्थिक असुरक्षाक रूप देखबैत अछि। ई सम्बन्ध जीवन-वर्णनक विवरणसँ चिन्हल जा सकैत अछि। मुदा विशेष जातीय अपमानक अनुपस्थित दृश्य जोड़ि देलासँ साक्ष्यक शक्ति उलटे कमजोर होयत। ठाकुरक सावधान पठनक परिणाम ई जे पाठक मेहनत, अवरोध आ स्वयं कथनक अधिकारमे सामाजिक असमानता देखैत अछि।

एहि ठाम एक अतिरिक्त आलोचनात्मक प्रश्न उठैत अछि। आत्मपरिचयक पहिल घोषणा लेखकक जीवनक अन्तिम व्याख्या तय करैत अछि कि नहि? साफीक बादक शिक्षा-चयन, प्रवास, परिवार आ धार्मिक-सांस्कृतिक लगाव हुनका एकमात्र प्रतिरोधी प्रतिमा नहि बनबैत। ओ कतहु दबाव झेलैत छथि, कतहु लोकपरम्पराक संग चलैत छथि, कतहु अपन निर्णय पर स्वयं प्रश्न उठेबाक अवसर छोड़ैत छथि। सजीव जीवनलेखनक शक्ति एहि असंगति आ बहुविधतामे छिपल अछि।

५. पाँच सेर धान : श्रमक आर्थिक भाषासँ साहित्यिक अर्थ धरि

गजेन्द्र ठाकुरक आत्मकथा-समीक्षा अन्नमे देल जाएबला मेहनतानाकेँ विशेष महत्त्व दैत अछि। कपड़ा धोएबाक बदला धान, आटा अथवा आलू भेटबाक विवरण ग्राम्य सेवा-सम्बन्धक वास्तविक अर्थव्यवस्था देखबैत अछि। नकदक नियमित प्रवाह नहि रहलासँ परिवारक भोजन कखनो चलि सकैत छल, मुदा पढ़ाइ, उपचार, यात्रा आ भविष्यक बचत असुरक्षित रहैत छल। लेखक एहि व्यवस्थाकेँ विस्तृत आर्थिक सिद्धान्तक शब्दमे नहि, वस्तुक नाम आ मापमे दर्ज करैत छथि; आलोचक ओहि मापक सामाजिक अर्थ खोलैत छथि।

आत्मकथामे माताक बकरी पालब, ओकरा बेचि बाछी आनब आ घरक आमदनीक विकल्प खोजब सेहो उल्लेखनीय अछि। एहि प्रसंगकेँ केवल 'माता

परिवारक सहयोगी छलीह' कहि देलासँ स्त्रीक आर्थिक निर्णयक तथ्य छूटि जाइत अछि। पिताक शिक्षा-प्रयत्न आ माताक तत्काल जीविकाक चिन्ता परस्पर विरोधी चरित्रदोष नहि; संसाधनक सीमामे अलग प्राथमिकता छथि। गजेन्द्र ठाकुरक अध्ययन ई जटिलता बचाबय चाहैत अछि। अगिला निकटपाठमे गृहश्रमक समय, उद्यमक जोखिम आ जीवनक वैकल्पिक निर्णय पर आरो प्रश्न उठाओल जा सकैत अछि।

एहि अन्न-मजदूरीक विवरणक प्रतिध्वनि पोथीक आन खण्डसभमे सेहो सुनाइत अछि। कवितामे भोजन आ विवाह-भोज सामाजिक प्रदर्शन बनैत अछि; 'ओगरबाह'मे खेतक रखवाली करनिहार वृद्धक मन भातक लालसासँ भरल अछि; 'पसीखाना'मे अन्न पर पुरुषक मनमाना नियन्त्रण सामने अबैत अछि। एकहि वस्तु अन्न कहियो मेहनतानाक एकक, कहियो असमान उपभोग, कहियो श्रमक फल आ कहियो घरेलू अन्यायक स्रोत बनैत अछि। एही अन्तरक कारण पाँचू खण्डक तुलना फलदायी अछि।

६. प्रवास, शरीर आ शिक्षाक टुटैत-जुड़ैत क्रम

नेपाल, चण्डीगढ़ आ बेंगलुरुक अनुभवक माध्यमसँ आत्मकथा गामसँ शहरक सीधा सफलता-मार्ग नहि बनबैत। बाल्यक पढ़ाइ बाधित होइत अछि, सम्बन्धी लोकक मार्फत श्रमक अवसर भेटैत अछि, प्रमाणपत्रक कमी रोजगारक रास्ता रोकैत अछि, गाम फेर परीक्षा आ परिवारक कारण अनिवार्य ठेकान बनैत अछि। ठाकुर एहि आवागमनकेँ चक्रीय संरचना मानैत छथि। ई पढ़ाइ सार्थक अछि : गाम पछाड़ल अतीत नहि, आ शहर सुनिश्चित मुक्ति नहि। दुनू ठाम अवसर आ विवशता एकसाथ उपस्थित अछि।

चण्डीगढ़मे पएरमे आगि लगबाक घटना पर समीक्षक विशेष ध्यान दैत छथि। घायल शरीरक संग साइकिल चलाकऽ उपचार लेल जेबाक प्रसंग व्यक्तिगत सहनशीलताक कोमल कथा मात्र नहि; ई असुरक्षित श्रम, उपचारक लागत आ रोजगारीक अवरोधक साझा यथार्थ अछि। देह-सम्बन्धी बिम्ब काव्यालंकारसँ स्वतंत्र साक्ष्यात्मक शक्ति रखैत अछि। एक पएरक सहारे यात्रा करनिहार

व्यक्ति अपन सामाजिक परिस्थिति देहपर अनुभव करैत अछि। मुदा चोटक कारण वा अपराधक कल्पित व्याख्या एतय उचित नहि।

समयरेखा पर ठाकुर एक विसंगति सेहो चिन्हैत छथि—उल्लिखित जन्म-वर्ष आ नेपाल-प्रवासक वर्षक संग बताओल वय पूर्ण मेल नहि खाइत अछि। एहि अन्तरकेँ तिरस्कारक साधन बनबाओ नहि चाही, न बिना सूचनाक 'सुधार' देबाक आधार। स्मृति आपन समय मनोभाव आ संकटक क्रममे सेहो बनबैत अछि। मुदा साहित्यिक आत्मकथा जखन सामाजिक इतिहासक स्रोत बनैत अछि, तखन तिथि, वय आ स्थानक अन्तर सुस्पष्ट टिप्पणीक अधिकारी होइत अछि। एहि प्रकारक सावधानी आलोचनाक गुण थिक।

७. परिवारक नैतिक असहजता आ मातृभाषाक पुनः अधिकार

आत्मकथामे विवाह आ दहेजक प्रसंग साफीक संघर्षक एक असुविधाजनक आयाम खोलैत अछि। आर्थिक संकटक समय विवाहसँ भेटनिहार धनकेँ बहिनक विवाहक लागतसँ जोड़बाक विचार पारिवारिक अनिवार्यता दर्शबैत अछि, मुदा दहेज-व्यवस्थाक नैतिक प्रश्न सेहो उठबैत अछि। गरीबी बुझल जा सकैत अछि, तथापि स्त्रीक विवाहकेँ लेनदेनक साधन बनबैत व्यवस्था पर आलोचना रुकि नहि सकैत। ठाकुर एहि द्वन्द्वकेँ लेखकक जीवनक संपूर्ण नकार अथवा नैतिक शुद्धता—दुनूसँ अलग राखैत छथि।

माता, बहिन आ पत्नी लेखकक जीवनमे महत्त्वपूर्ण छथि; मुदा हुनकर अपन प्रत्यक्ष आवाज अपेक्षाकृत सीमित अछि। आलोचक एहि अनुपस्थितिक उल्लेख करैत छथि। एहि संकेतकेँ एक अतिरिक्त पद्धतिगत नियम बनाओल जा सकैत अछि : ककरा सम्बन्धमे कतेक कहल गेल अछि, तकरा संग ईहो पूछब चाही जे ककर आवाज लेखकक कथनमे प्रवेश नहि कऽ सकल। पुरुष आत्मकथाक अनुभव वास्तविक रहलोपर परिवारक समग्र इतिहासक स्थान नहि लऽ सकैत अछि।

मैथिली विषयक चयन आ अध्ययनक क्रम लेखककेँ नव सांस्कृतिक सार्वजनिकतासँ जोड़ैत अछि। मित्रक सहयोग, पुस्तक जुटेबाक कठिनाई, परीक्षा-प्रयत्न आ भाषाक प्रति बढैत अनुराग आत्मनिर्माणकेँ सामूहिक सम्बन्धक भीतर देखबैत अछि। अन्तिम स्वरमे भाषिक गौरव उपस्थित अछि,

मुदा रोजगारक सुरक्षा अभी अपूर्ण अछि। एतय आत्मकथाक कथानक 'अन्तिम विजय'मे समाप्त नहि होइत; आर्थिक असुरक्षाक भीतर अर्जित शब्दाधिकारक रूपमे खुलैत अछि। ठाकुरक समीक्षा एहि अनसुलझल अन्तकेँ विचारक केन्द्र बनबैत अछि, ई ओकर उल्लेखनीय उपलब्धि अछि।

तृतीय विभाग : कविताक लोक-संसार आ रूप-विवेचन

८. अट्ठाइस कविता : ऋतु, गाम आ लोकबोलीक बहुवचन

कविता खण्डमे गजेन्द्र ठाकुर अट्ठाइस कविताक रूप आ कथ्यक परीक्षण करैत छथि। रौदी, शीतलहरी, बैशाखक दुपहर, पोखरि-इनार, पाबनि, बरियाती, गृहकलह, खेतक श्रम आ बुढ़ापाक असहायता एक साथ आबैत अछि। ई वैविध्य केवल विषयसूची नहि; एतय कविक दृष्टिबिन्दु ग्राम्य जीवनक अलग-अलग प्रांगणमे फिरैत अछि। समग्र संग्रहकेँ एकहि नारा-प्रधान दलित कविता मानि देलासँ एहि बहुवचनक स्वर छूटि जएत। साफीक सामाजिक परिचय महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा कविताक पात्र आ कथावाचकक प्रत्येक अनुभव स्वतः ओही जीवनीक प्रत्यक्ष घटना नहि।

'भकजोगनी'मे अन्हारक भीतर कुकुरक आवाज, कीटक-ज्योति आ निर्गुण गीतक सहारा लेबाक विवेचन ठाकुरक समीक्षामे भेटैत अछि। प्रकृति एतय चित्रमात्र नहि, श्रव्य आ सामाजिक अनुभव बनैत अछि। 'रौदी भऽ गेल'मे कृषकक असुरक्षा, गीत आ निष्फल प्रार्थनाक रूपक देखल गेल अछि। शीर्षक-कविता 'बैशाखमे दलानपर'मे गरमीक आलस्य, पुरबा हवा, महिष आ ताशक निमन्त्रणसँ दिनक वृत्ताकार समय बनैत अछि। एक ओर फसलक संकट, दोसर ओर अवकाशक आलस्य : ई विरोध ग्राम्य जीवनक एकरूप भावचित्र बन्नासँ रोकैत अछि।

एहि कवितासभक आलोचना तखन सफल अछि जखन कथ्यक सारांशसँ हटि ध्वनि, आवृत्ति, दृश्य आ पाँतिक गति पर ध्यान दैत अछि। 'सन-सन', 'कौआ कुचरैए' अथवा निमन्त्रणक पुनरावृत्ति लोकध्वनिक ऊर्जाक संकेत दैत अछि। मुदा किछु रचना गद्यात्मक कथनकेँ पाँतिमे विभाजित करैत अछि, जतय

छन्दक अनुशासन अथवा अर्थक संक्षेप अपेक्षाकृत कमजोर पड़ैत अछि। सामाजिक अनुभवक गम्भीरता ई शिल्पगत अन्तरक परीक्षणकेँ अनावश्यक नहि बनबैत; उलट एकर जाँचक कारण बनैत अछि।

९. दलान : लोक-सार्वजनिकता आ असमान प्रवेशक स्थल

पोथीक शीर्षकक 'दलान' विशिष्ट स्थानक नाम अछि। ठाकुरक तुलनात्मक विवेचन देखबैत अछि जे ई एकहि अर्थमे स्थिर नहि। 'बैशाखमे दलानपर'मे मित्रक अवकाश-आमन्त्रण अछि; 'मरैतखीन रसगुल्ला खाएब'मे वृद्धावस्थाक एकान्त; 'आसकतिये गंगा दूर'मे लोकक आवागमन; आ 'ओ दिन बिसरि गेलही रौ'मे पुरान परिचयक पुनर्स्थापना। एकहि स्थान अलग रचनामे सामूहिक गप, सामाजिक स्मृति, निर्भरता आ असगरपनक भिन्न रंग ग्रहण करैत अछि।

दलानकेँ प्राचीन ग्राम्य लोकतन्त्रक स्वतः समानतामूलक प्रतीक मानब असावधान निर्णय होयत। दलानपर ककरा बैसबासँ सामाजिक स्वीकृति भेटैत अछि, ककरा सेवा करब पड़ैत अछि, स्त्रीक उपस्थिति कतेक स्वतंत्र अछि, जाति आ वर्गक आधारपर स्थानक बँटवारा होइत अछि कि नहि—ई प्रश्न रचनाक सम्भावित समाजशास्त्रीय विस्तार छथि। मूल कवितासभ प्रत्येक प्रश्नक प्रमाण नहि दैत अछि; तें आलोचककेँ निष्कर्षक बदला शोधक दिशा रूपमे ओहि प्रश्नकेँ राखबाक चाही।

शीर्षकक एहि बहुस्तरीयता साहित्यिक रूपेँ मूल्यवान अछि। कविता दलानक एक छोट स्थानसँ गामक मौसम, परिवारक वेदना आ सार्वजनिक आलोचनाक अन्तराल खोलैत अछि। दलानकेँ केवल ग्रामीण नॉस्टैल्जियाक मंच बनाओलासँ एहि तनावक अर्थ घटि जाइत अछि। ठाकुरक समीक्षामे स्थानक बदलैत उपयोगक पहचान केवळ काव्य-प्रतीक नहि, साहित्यिक समाजशास्त्रक प्रवेश-बिन्दु बनि सकैत अछि।

१०. उत्सव, उपभोग आ विवाहक छुपल अर्थव्यवस्था

कवितामे भोज, सगुन, बरियाती, साड़ी-सामान, पाबनि आ सामुदायिक भोजन बारम्बार अबैत अछि। प्रारम्भिक दृष्टिमे ई चित्र लोकरस आ हास्य उत्पन्न करैत अछि। मुदा ठाकुरक अध्ययन जखन 'एक ठाम गेलहुँ बरियाती', 'वर बिकाय

लगनमे' आ 'सेवा'क परस्पर सम्बन्ध देखैत अछि, तखन विवाहक तीन आर्थिक रूप खुलैत अछि—प्रतिष्ठाक सार्वजनिक प्रदर्शन, वरक मोलतोल आ घरेलू श्रमक अनुचित अपेक्षा। साहित्यिक हास्य एहि तरहें सामाजिक सौदाक आलोचना बनि सकैत अछि।

कौआक सगुन, प्रियजनक आगमन आ घरेलू तैयारीक प्रसंगक भीतर स्नेहक अपेक्षा अछि; एकरा शोषणक तैयार सिद्धान्तमे समेटब उचित नहि। एकरे संग उत्सवक श्रमक असमानता सेहो देखबाक विषय अछि। घर सजाबनिहार, भोजन बनाबनिहार आ उत्सवक खर्च वहन करनिहार व्यक्तिक अनुभव समारोहक दृश्यसँ ओझरा सकैत अछि। हँसी आ लोकरीति पर समीक्षाक उचित दृष्टि न त घृणा, न अन्धप्रशंसा; सामाजिक प्रसंग आ अभिव्यक्तिक रूपक संयुक्त परीक्षण अछि।

सम्पादकीय दृष्टिसँ कविताक सशक्त बिन्दु ओतय अछि जतय साधारण वस्तु समाजक सम्बन्ध खोलि दैत अछि—महिषकीनबाक लागत, बरियातीक खेनाइ, खेतक श्रम अथवा वृद्धक असगरपन। दुर्बल बिन्दु कतिपय रचनामे नसीहतक रूप लेबैत अछि, जतय जटिल समस्या पर एक पूर्वनिर्धारित नैतिक निर्णय हावी भऽ जाइत अछि। ठाकुरक अध्ययन जँ एहि भिन्नता स्पष्ट करैत अछि, तँ समग्र संग्रहक मापन संतुलित बनैत अछि।

११. स्त्रीक श्रमक स्वीकृति आ पितृसत्तात्मक दृष्टिक पुनरावृत्ति

कविता खण्डक सामाजिक प्रगति एकरेखीय नहि अछि। एक रचनामे पुरुषक अत्यल्प कारणसँ स्त्रीपर हिंसा होइत अछि आ घरेलू श्रमक अनदेखी तीक्ष्ण रूपमे उद्घाटित होइत अछि। दोसर रचनामे पढ़ल-लिखल पुतोहुक प्रति संशय वा आदर्श संयुक्त परिवारक पुरान अनुशासनक समर्थन देखल जा सकैत अछि। गजेन्द्र ठाकुर एहि विरोधकेँ चिन्हैत छथि। दलित रचनाकार हेबाक आधारपर प्रत्येक स्त्री-विषयक कथनकेँ स्वयंसिद्ध मुक्तिकामी घोषणा मानल नहि जा सकैत।

एहि अन्तरक परीक्षणमे कथनकर्ता विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। कविता के बजैत अछि—पीड़ित स्त्री, असन्तुष्ट परिवार-प्रधान, हास्य करनिहार मित्र, अथवा

सामाजिक नीतिक कथावाचक? एक पात्रक संकुचित विचारकेँ कविक अंतिम मत मानब उतनहि असावधान अछि जतेक कविक स्पष्ट नैतिक टिप्पणीकेँ पात्रक स्वतन्त्र आवाज मानब। एहि कारण पात्रक भाषिक रूप आ अन्तिम काव्यनिर्णयक दूरी पर विशेष ध्यान अपेक्षित अछि।

साफ-साफ पक्ष लेनाइ कविता लेल दोष नहि; किन्तु काव्यात्मक शक्ति तब बढ़ैत अछि जखन दृश्य, विडम्बना आ प्रतीक पाठककेँ सोचबाक स्थान दैत अछि। घरक श्रम, वृद्धक उपेक्षा आ विवाहक बाजार पर साफीक कविता लोकपाठकक संग प्रत्यक्ष संवाद रचैत अछि। ओही प्रत्यक्षताक सीमा कखनो घोषणात्मक सरलता अछि। एहि दोहरी उपलब्धि आ सीमा पर ठाकुरक आलोचनाक मूल्य आधारित अछि।

चतुर्थ विभाग : विहनि कथाक संवाद आ सामाजिक निर्णयन

१२. तीन विहनि कथा : छोट रूपक भीतर अधिकारक संघर्ष

‘अन्ध विश्वास’, ‘साउस पुतोहु’ आ ‘सगुन’—विहनि कथा खण्डक ई तीन कथा बहुत छोट आकारमे व्यापक सामाजिक तन्त्रक संकेत दैत अछि। ठाकुरक समीक्षाक प्रश्न मुख्यतः कथाक निष्कर्ष नहि, संवादक क्रिया अछि। पात्र जे बजैत अछि, ओ निजी राय व्यक्त करबाक संग समाजमे अपन जगह, भय आ अधिकारक दावा सेहो बनबैत अछि। एहि कथासभक घटना बाह्य रूपेँ छोट अछि; मुदा शब्दक सामाजिक परिणाम पैघ अछि। छोट कथा लेल ई कलात्मक रूपेँ उपयोगी कसौटी थिक।

एहि विधाक मूल्यांकन कथानकक अभाव कहि कऽ नहि होएबाक चाही। ‘अन्ध विश्वास’मे गप आरोपक रास्ता पकड़ैत अछि; ‘साउस पुतोहु’मे घरे लू बहसक बढ़ैत तीव्रता परिवारक पदानुक्रम खोलैत अछि; ‘सगुन’मे विवाहक तैयारीक सहमति धनक व्यवस्था आ बेटीक अनुपस्थित निर्णय बनि जाइत अछि। ई तीनू कथा क्रमशः अप्रमाणित दोष, श्रमपर नियन्त्रण आ आर्थिक सौदाक नाटकीय सघनता देखबैत अछि।

तथापि छोट आकार अपनेमे सफलता नहि। कथा कतेक स्वतन्त्र जीवन-क्षण देखबैत अछि, शब्दक पीछे कतेक अनकहल संसार छोड़ैत अछि, अन्तिम वाक्य

केतेक अर्थ खोलैत अछि, आ पात्रक आवाज लेखकक आदेशसँ कतेक मुक्त अछि—ई प्रश्न जोड़ने आलोचना विधागत रूपेँ अधिक पूर्ण होइत अछि। ठाकुरक अध्ययन एहि दिशामे ठोस आधार दैत अछि।

१३. 'अन्ध विश्वास' : गप, अफवाह आ स्त्रीपर आरोप

'अन्ध विश्वास'मे घरेलू भोजनक चर्चा, काकीक अनुभवक दावा आ पड़ोसक बातचीतक माध्यमेँ एक सामाजिक वातावरण बनैत अछि। क्रमशः रोग अथवा मृत्युकेँ जादू-टोना आ स्त्रीक 'विद्या'सँ जोड़बाक आरोपक रास्ता खुलैत अछि। ठाकुरक व्याख्याकेँ पढ़ैत काल ध्यान रहबाक चाही जे कथा सामाजिक दण्डक सम्पूर्ण लम्बा इतिहास प्रस्तुत नहि करैत; ओ आरोप बनबाक भाषा देखबैत अछि। एही भाषिक क्षणमे कथाक तीक्ष्णता अछि। न्यायिक प्रमाणक बिना सामान्य गप ककरो प्रतिष्ठा तोड़बाक क्षमता हासिल करैत अछि।

बड़की दीदीक प्रतिवाद एक विवेकपूर्ण आवाज प्रस्तुत करैत अछि। मुदा आलोचना जँ केवल 'ज्ञानक जीत' पर रुकि जाए तँ कथा द्वारा उद्घाटित सामाजिक संकट अधूरा रहत। आरोप कहनिहार स्त्रीक अपन श्रम, असुरक्षा, स्मृति आ परिवारक विवाद सेहो अछि; ई स्वर शून्यतामे उत्पन्न नहि होइत। अन्धविश्वासक समस्या धार्मिक आस्था पर सार्वत्रिक टिप्पणी नहि, ककरो पीड़ा आ मृत्यु पर गलत कारणारोपणक विशिष्ट प्रश्न अछि। प्रमाण-आधारित सावधानी एहि कथाक मानवतावादी अर्थ बचेबामे आवश्यक अछि।

कथा एक सीमा सेहो छोड़ैत अछि : आरोपसँ पीड़ित व्यक्तिक स्वतन्त्र कथन कतेक उपलब्ध अछि? समाजक सामूहिक निर्णय केना प्रभावित होइत अछि? ई प्रश्न कथाक भीतर समुचित उत्तर नपाबि सकैत अछि। मुदा विहनि कथाक कलात्मक विधा अक्सर सीमित दृश्यसँ विस्तृत सामाजिक आशंका उत्पन्न करैत अछि। तें रचनाक अपूर्णता कोनो एक अर्थमे दोष आ दोसर अर्थमे पाठकक विवेक लेल खुलल स्थान होइत अछि।

१४. 'साउस पुतोहु' : घरक काम, पदानुक्रम आ प्रतिवाद

'साउस पुतोहु'क बहस स्त्री-स्त्री विरोधक सामान्य कथा नहि; ई घरेलू श्रमक मोल, आरामक अधिकार आ सम्बन्धक सम्मानक परीक्षा अछि। सासु-पुतोहुक

संवादमे पुरान अधिकार आ नव असहमतिक्षेत्र टकराइत अछि। पारिवारिक जीवनमे खाना-पकौनाइ, सफाइ आ सेवा रोजक काम बुझल जाइत अछि, मुदा ओकर असमान वितरण हिंसक विवादक कारण बनि सकैत अछि। ठाकुरक समीक्षाक सशक्त पक्ष ई अछि जे ओ वैयक्तिक स्वभावक दोषसँ आगाँ घरक सत्ता-संरचना पर ध्यान दैत अछि।

अनुपस्थित पुत्रक नाम लऽ धमकी देल जाएब विशेष अर्थवान अछि। जे पुरुष दृश्यपर नहि अछि, ओकर कथित अधिकार बहसक दिशा बदलि सकैत अछि। एतय सत्ता केवल उपस्थित शरीरसँ नहि, सामाजिक प्रत्याशासँ सेहो काम करैत अछि। कथा यदि छोट संवादमे ई व्यवस्था उघारैत अछि, तँ एकर नाटकीय संक्षेप सफल अछि। एकर विपरीत पात्रसभक बिनाकारण कठोर ध्रुवीकरण कथाक जटिलता सीमित करि सकैत अछि।

परिवारक झगड़ा सार्वजनिक लोकनिन्दाक भयक संग जुड़ैत अछि। पड़ोसक नजर घरक अन्तःपुरमे प्रवेश करैत अछि। स्त्रीक प्रतिवादकेँ स्वच्छन्दता अथवा दुर्व्यवहारक सिद्ध प्रमाण मानि देल जाए तऽ कथा सामाजिक नियमक दोहराव बनि रहत। आलोचनाकेँ श्रमक अनुभव, सम्बोधनक भिन्नता, शब्दक तीव्रता आ विकल्पक अभाव जकाँ सूक्ष्म संकेत पर टिकबाक चाही।

१५. 'सगुन' : शुभारम्भक भाषा आ दहेजक सहमति

'सगुन'क संवादमे विवाह-सम्मतिपर पहुँचबाक क्रम सामाजिक विश्वासक दृश्य बनैत अछि। ठकोकाकाक मध्यस्थता, हर्षित बाबूक तत्परता आ धनक लेनदेनक स्वीकृति एकक संग चलैत अछि। शुभता जनाबऽवला शब्द जखन दामक प्रश्न छिपबैत अछि, तखन सगुन सांस्कृतिक विश्वास आ आर्थिक सौदा दुनूक भाषा बनैत अछि। ठाकुरक समीक्षा एहि द्वैधताकेँ पहचानैत अछि।

कथाक महत्त्वपूर्ण अनुपस्थिति कन्याकेँ भेटैत निर्णय-अवकाश अछि। विवाहक चर्चा करनिहार पुरुषसभ दृश्य भरि सकैत छथि; मुदा जकर जीवनक सम्बन्ध निश्चित होएत, ओकर अपन शब्द कतेक सुनाइत अछि? स्त्रीक मौन केवळ अनुपस्थित पात्रक तकनीकी परिणाम नहि, कथाक सामाजिक तन्त्रक संकेत सेहो

भऽ सकैत अछि। तथापि एहन पाठन लेल कथाक वास्तविक संवाद-संरचना पर टिकनाइ जरूरी अछि, कल्पित अन्तर्मनक भाषण जोड़नाइ नहि।

कविता ‘वर बिकाय लगनमे’ आ ‘सगुन’क तुलना ठाकुरक गम्भीर आलोचनात्मक उपलब्धि अछि। एक ठाम विवाह-बाजारपर व्यंग्य अछि; दोसर ठाम सहमति आ परम्पराक भाषा आर्थिक मोलतोल सहज बना दैत अछि। एकहि लेखकक संग्रहमे विपरीत सामाजिक दृष्टि उपस्थित हो सकैत अछि। साहित्यिक आलोचना ई विरोधकेँ ‘त्रुटि’ कहि मिटबैत नहि, बल्कि रचनाकारक सामाजिक स्थिति आ विधागत आवाजक भिन्नता देखबाक अवसर मानैत अछि।

पंचम विभाग : लघुकथाक अन्न, देह आ स्त्रीक स्वर

१६. ‘ओगरबाह’ : खेतक रक्षक आ भोजनक असमान अधिकार

‘ओगरबाह’क केन्द्रमे वृद्ध खेत-रखवालाक श्रम आ भातक इच्छा अछि। कृषि-जीवनक सामान्य इतिहासमे भूमिक मालिक, बिआ, फसल आ बजारक चर्चा होइत अछि; खेतक रखवालीक राति, ऊँघ, कीट-पतंग आ पक्षीसँ संघर्ष प्रायः गौन रहैत अछि। साफी एहि अदृश्य श्रमकेँ कथा-शीर्षकक रूप दैत छथि। ठाकुर ई शीर्षकक सामाजिक अर्थ पहिचानैत छथि। श्रम करनिहार व्यक्ति फसल देखैत छथि, मुदा उत्पाद पर हुनकर भोजनक सुरक्षित अधिकार नहि—एहि विडम्बनासँ कहानीक नैतिक केन्द्र बनैत अछि।

वृद्धक भातक लालसा आ मड़ुआक भोजनक सन्दर्भकेँ एकरेखीय ‘अन्नक अभाव’क विषय बनाओल पर्याप्त नहि। भोजनक प्रकार सामाजिक प्रतिष्ठा, चाहना, आयु आ स्वादक स्मृतिसँ सेहो जुड़ल अछि। भात चाहब एक आहारिक इच्छा होइतहुँ सम्मानक आकांक्षा बनि जाइत अछि। एकरे संग पुतोहुक खीझ पर तुरन्त नैतिक फैसला नहि करबाक चाही; ओकर श्रम, थकान आ साधनक स्थिति कथामे कतेक उपस्थित अछि, ई प्रश्न अलग उठैत अछि। कथावाचकक सहानुभूति ककर संग अछि, एकर परीक्षा आलोचनाक जिम्मेदारी अछि।

कमला नदी आ खेतक भू-दृश्य केवल रमणीय पृष्ठभूमि नहि; फसल, मौसम आ श्रमक परस्पर निर्भरता देखबैत अछि। मुदा खेतीक आधुनिक परिवर्तनपर पात्रक

सामान्य कथनकेँ कृषि-इतिहासक अंतिम प्रमाण मानब उचित नहि। ठाकुरक अध्ययन एहन सामान्यीकरणपर सावधानी बरतैत अछि। रचनाक कथात्मक उपलब्धि एक वृद्ध श्रमिकक भूखक माध्यमसँ सामाजिक व्यवस्था प्रश्नांकित करब अछि; ओकर सीमा ओ ठाम अछि जतय गद्य निबन्धात्मक विवेचनमे फैलि कथा-गतिकेँ धीमा करैत अछि।

१७. 'पसीखाना' : घरक धान, मद्यपान आ श्रमक अधिकार

'पसीखाना'मे भुखना नामक पुरुषक व्यवहार, घरक अन्न बेचबाक प्रसंग, पत्नी द्वारा धान-कटनी आ पशुपालन, तथा बच्चाक भोजनक दृश्य घरेलू असमानताक अलग रूप प्रस्तुत करैत अछि। ठाकुरक समीक्षा मे बच्चाक आँखिसँ देखल बासि भात-सागक विवरण विशेष महत्त्व रखैत अछि। ई छोट वस्तु परिवारक वास्तविक अर्थव्यवस्था पर भारी नैतिक टिप्पणी बनि जाइत अछि। बच्चा समाजशास्त्रीय सिद्धान्त नहि दैत; अपन भोजनक स्थिति कहैत अछि। कथाक साहित्यिक शक्ति एही प्रत्यक्षतामे अछि।

घरमे धान उपस्थित होएबाक बादो ओकर उपयोगक निर्णय श्रम करनिहारी स्त्रीक हाथमे सुरक्षित नहि। पत्नी खेतमे श्रम करैत छथि, मुदा अनुपस्थितिक क्षणमे पुरुष वस्तु बेचि सकैत अछि। एहि दृश्यसँ सम्पत्ति आ श्रमक सम्बन्धक मूल असमानता खुलैत अछि। शराबक प्रश्नको केवल व्यक्तिगत दुर्गुणक तिरस्कारमे सीमित नहि रखबाक चाही; सामूहिक संगति, बेरोजगारीक संकेत आ परिवारक आर्थिक विघटनक सम्बन्धक जाँच आवश्यक अछि। किन्तु स्पष्ट पाठाधारक बिना कोनो चिकित्सकीय रोग-नाम अथवा विशेष सामाजिक कारण ठहराएब उचित नहि।

कथाक अन्तर्धारामे पत्नीकेँ बोलबाक अवसर भेटैत अछि। ओ हिंसा, परिश्रम, आशा आ मायके जेबाक अधूरा निर्णयक बात कहैत छथि। ई आवाज कथाक एक उल्लेखनीय उपलब्धि अछि। तथापि ओकर संपूर्ण जीवन पतिक दोषक सन्दर्भमे घेराएल रहैत अछि; स्वतंत्र इच्छा आ सामाजिक सहायताक विस्तृत संसार लगभग बाहर रहैत अछि। एहि अन्तरकेँ स्वीकारने स्त्री-स्वायत्तताक आलोचना सार्थक होइत अछि।

१८. दू लघुकथाक तुलनात्मक कथनशिल्प

'ओगरबाह' आ 'पसीखाना' एकहि विधाक भीतर बहुत भिन्न रचना-गति अपनबैत अछि। पहिल कथा वृद्ध श्रमिकक स्मृति, कृषि-व्यवस्था आ विचारक विस्तारमे जाइत अछि; दोसर छोट आरम्भिक दृश्यसँ स्त्रीक लम्बा प्रतिवाद धरि बढ़ैत अछि। पहिल कथामे ऋतु आ श्रमक चक्रीय समय प्रमुख अछि; दोसरमे घरेलू संकटक एक दिन आ ओकर पीछे जमा अनेक दिनक स्मृति। ठाकुरक विवेचन ई भिन्नता पर उपयोगी प्रश्न उठबैत अछि।

'पसीखाना' शीर्षक स्वयं एक अनुपस्थित सामाजिक स्थलकेँ उपस्थित बनबैत अछि। कथानक घर, ओसारा आ टोलक बोलचालमे घटित होइत अछि, मुदा शराबखानाक विचार पात्रक आर्थिक निर्णय पर प्रभाव डालैत अछि। 'ओगरबाह' शीर्षक एक नामहीन श्रमिक पदकेँ साहित्यिक प्रतिष्ठा दैत अछि। एक कथामे उपस्थित श्रमक नाम, दोसरामे आंशिक अनुपस्थित स्थल—दूनू शीर्षक रचनाक सामाजिक अर्थक प्रवेशद्वार अछि।

लघुकथाक शिल्पक कसौटी केवल छोट शब्दसंख्या नहि। दृश्य कतेक आवश्यक, कथक कतेक हस्तक्षेपकारी, एकालाप कतेक सघन, आ अन्त कतेक खुलल—ई प्रश्न दूनू रचना पर अलग-अलग तरहें लागू होइत अछि। जँ आलोचना एहि भिन्नताकेँ बचबैत अछि, तखन ओ नैतिक टिप्पणीकेँ साहित्यिक परीक्षणमे बदलैत अछि।

षष्ठ विभाग : विचार-बिन्दु आ न्याय-चिन्तन

१९. 'राजा अओर परजा' : करुणाक नैतिकता आ अधिकारक भाषा

विचार-बिन्दु खण्डमे 'राजा अओर परजा' शीर्षक गद्य उपस्थित अछि। एकर केन्द्र ग्राम्य नेतृत्वक पुरान आदर्श, मालिक-आश्रितक सम्बन्ध, श्रमिकक भोजन, प्रवास आ मिथिलाक ऐतिहासिक-सांस्कृतिक स्मृति अछि। गजेन्द्र ठाकुर एहि रचनाकेँ विचारात्मक गद्यक रूपमे पढ़ैत छथि, केवल उपदेशक संग्रह नहि। एतय मुख्य प्रश्न ई अछि जे न्याय शासकक दया पर निर्भर रहत अथवा परजाक स्वतन्त्र अधिकार रूपमे स्थापित होएत।

कथनकारक पुरान समयमे सहायताक स्मृति एक मूल्यवान लोक-अनुभव हो सकैत अछि। धनवान लोक द्वारा असहायकक भोजन, संकटमे साथ आ विवादक निदानक अपेक्षा मानवीय रूपेँ महत्त्वपूर्ण अछि। मुदा दया जे देनिहारक इच्छा पर निर्भर हो, से अधिकारक सुनिश्चित स्थान नहि लऽ सकैत अछि। भोजन पाबएब, मजदूरीक उचित मोल, शिक्षा आ न्याय लेल शासकक व्यक्तिगत उदारता पर्याप्त नहि। ठाकुरक समीक्षाक मूल वैचारिक शक्ति एहि अन्तरकेँ स्पष्ट करब अछि।

'राजा' शब्दक अर्थ सेहो एकरेखीय नहि—कखनो प्राचीन शासक, कखनो स्थानीय प्रतिष्ठित व्यक्ति, कखनो सामुदायिक निर्णयकर्ता। एहि चलायमान अर्थसँ लोकभाषाक नैतिक शक्ति बनैत अछि, किन्तु तर्कमे अस्पष्टता सेहो प्रवेश करैत अछि। आलोचनाकेँ ई पहचानब आवश्यक अछि जे रूपकक राजा आ विधिक अधिकारी एक नहि। परजाक अनुभव लोकस्मृतिक विषय हो सकैत अछि; नागरिकक अधिकार संस्थागत न्यायसँ जुड़ल प्रश्न अछि।

२०. जनक, पुरान ग्राम्य व्यवस्था आ स्मृतिक प्रमाण-सीमा

राजा जनकक लोकस्मृति, अकाल आ वर्षा, शासकक दायित्व आ भक्त-भगवानक रूपक 'राजा अओर परजा'क नैतिक संरचना गढ़ैत अछि। ई प्रसंग सांस्कृतिक बोधक स्रोत छथि, मुदा प्रत्येक अलंकारिक कथा ऐतिहासिक घटना-प्रमाण नहि। ठाकुरक विवेचन एहि अन्तरक प्रति सतर्क अछि। लोकस्मृतिक अर्थ सम्माननीय रहलोपर ओकरा निर्बाध अभिलेखीय तथ्य मानब अनुसन्धानक पद्धति नहि होयत।

रचनामे 'पहिने' आ 'अखन'क विरोध बारम्बार लौटैत अछि। पहिने मालिकक संरक्षण, साझा भोजन आ आपसी विश्वासक आदर्श अछि; अखन महँगाइ, स्वार्थ आ प्रवासक असुरक्षा। मुदा जँ पूर्वकालक भीतर जातिगत पराधीनता, कम मजदूरी, स्त्रीक मौन आ संसाधनक असमान अधिकार सेहो रहैत छल, तँ केवल करुणाक स्मृतिसँ ओ काल न्यायपूर्ण सिद्ध नहि भऽ जाइत। एही ठाम विचारगद्यक नैतिक आकांक्षा आ सामाजिक इतिहासक विवेचन परस्पर टकराइत अछि।

बी.पी.एल. आ ए.पी.एल. सन प्रशासनिक शब्दक आविर्भाव लोकभाषाक विचारमे नव समयक संकेत अछि। वर्गीकरणक नाम पहिने नहि रहलासँ गरीबी पहिने नहि छल, एहन निष्कर्ष नहि निकलैत। अन्नक बदलैत स्वरूपसँ पोषण, आय आ मानवीय गरिमाक पूर्ण समानता सिद्ध नहि होइत। रचनामे भोजनक समानताक आशा आ श्रमक असमानताक पूर्ववर्ती वर्णन एक-दोसराकेँ चुनौती दैत अछि। गजेन्द्र ठाकुरक समीक्षाक उपलब्धि एहि अन्तर्विरोधकेँ छोपबाक बदला खुलल छोड़ब अछि।

२१. विचारगद्यक शैली : लोक-वाक्य आ तर्कक अवकाश

'राजा अओर परजा'क भाषा औपचारिक शास्त्रीय प्रबन्धक कठोर अनुच्छेद-विन्याससँ अधिक मौखिक गपक लयपर चलैत अछि। स्मृति, उदाहरण, प्रश्न, नैतिक निष्कर्ष आ लोकविश्वासक अवर्तन एहि कथनमे मिलैत अछि। एहि लयक कारण कृति सामान्य पाठकक निकट रहैत अछि; परम्परागत अवधारणा दैनिक श्रम आ भोजनसँ जुड़ैत अछि। साहित्यिक मूल्य एहि सुलभतामे सेहो अछि।

किन्तु लोकभाषाक सहजता निर्णायक तर्कक स्वतः प्रमाण नहि। जे ठाम सब कठिन समस्याक समाधान एक आदर्श मालिकक उदारता मे देखल जाइत अछि, ओतय श्रमिकक स्वतन्त्र सौदेबाजी, न्यायक प्रक्रिया आ अधिकारक प्रश्न पीछे छूटि जाइत अछि। लेखकक सहानुभूति मानवीय अछि, मुदा विमर्शक ठोसपन असमान अछि। आलोचना एहि कमजोरीक उल्लेख करैत अछि तँ रचनाक संवेदनाक अवमानना नहि करैत, बल्कि ओकर वैचारिक क्षमता अधिक स्पष्ट करैत अछि।

एहि विचारगद्यक तुलना 'पंचनामा'क दस्तावेजी समाधान, 'ओगरबाह'क श्रम-व्यवस्था आ आत्मकथाक अन्न-मजदूरीसँ विशेष रूपेँ अर्थपूर्ण अछि। एकहि पोथीमे परम्परागत उदारता आ अधिकार-आधारित व्यवहारक संकेत एकसंग रहल अछि। साहित्यकार अपन सभ विधामे एक व्यवस्थित राजनीतिक दर्शन नहि दोहरबैत; ओ अनुभव आ मूल्यक अनेक स्तर पर बोलैत अछि। आलोचकक कार्य एहि असमान बहसकेँ पहचानब अछि।

सप्तम विभाग : पाँचू खण्डक अन्तर्वर्ती तुलनात्मक प्रश्न

२२. भोजनक बदलैत अर्थ : पारिश्रमिक, प्रतिष्ठा आ भूख

पाँचू खण्डकेँ जोड़निहार सर्वाधिक सघन सूत्र अन्न अछि। आत्मकथामे धान, आटा, आलू श्रमक बदला भेटैत साधन छथि। कवितामे बरियातीक भोज सामाजिक प्रदर्शन आ सामूहिक आकांक्षाक क्षेत्र बनैत अछि। 'ओगरबाह'क वृद्धक भातक इच्छा श्रमिकक सम्मानक प्रश्न उठबैत अछि। 'पसीखाना'मे धानक बोरा घरक सम्पत्तिपर असमान नियन्त्रणक प्रतीक अछि। 'राजा अओर परजा'मे अन्न शासकक करुणा आ परजाक असुरक्षित निर्वाहक कसौटी बनैत अछि।

ई सभ प्रसंग 'भूख'क एकहि रूप नहि। कतहु वस्तुक पर्याप्तता प्रश्न अछि, कतहु स्वाद, कतहु सामाजिक सहभागिता, कतहु कमाइमे अधिकार, कतहु दया बनाम न्याय। गजेन्द्र ठाकुरक आलेखसभमे अलग-अलग उपस्थित एहि अर्थसभकेँ एक संग पढ़लासँ पुस्तकक सामाजिक नाड़ी अधिक स्पष्ट सुनाइत अछि। आलोचना यदि केवल 'गरीबी' नामक एक व्यापक शब्द अपनाबैत तऽ एहि सूक्ष्म अन्तरक क्षति होइत।

अन्नक प्रतीक अथवा रूपकक बात करैत काल ओकर भौतिकता नहि बिसरबाक चाही। कपड़ा धोबाक वस्तुगत मोल, धान काटबाक श्रम, विद्यालयक लागत आ उपचारक खर्च—ई सभ भोजनक लोकचित्रसँ परे वास्तविक संसाधन-संघर्ष अछि। साहित्य एतय विचारक छवि होइतहुँ रोजमर्राक अर्थव्यवस्थाक बोलचाल बनि जाइत अछि।

२३. स्त्रीक उपस्थिति, निर्णयक अधिकार आ मौनक पद्धति

आत्मकथामे माताक पशुपालन, पत्नी आ बहिनक सीमित आत्मवाणी; कवितामे हिंसाक शिकार स्त्री आ पढ़ल-लिखल पुतोहुक प्रति सन्देह; विहनि कथामे सासु-पुतोहुक बहस आ विवाहमे बेटीक अनुपस्थिति; लघुकथामे खेतमे कमाइबाली पत्नी; विचारगद्यक बेटी-विवाहक खर्च—ई सभ विवरण पाँचू खण्डमे स्त्रीक स्थानक बदलैत रूप देखबैत अछि। एतए स्त्री केवल एक प्रतीक नहि; काम करनिहारी, निर्णय चाहनिहारी, विरोध करनिहारी आ सामाजिक नियन्त्रण झेलनिहारी व्यक्तिक अनेक सम्भावना उपस्थित अछि।

गजेन्द्र ठाकुरक अध्ययनसभ एहि प्रश्नकेँ विस्तृत स्थान दैत अछि, विशेषतः स्त्रीक श्रमक अदृश्यता आ कथनाधिकारक विसंगतिपर। एहि पढ़ाइमे एक आवश्यक मर्यादा अछि : लेखकक सामाजिक परिचय स्त्री-पात्रक अनुभवक पूर्ण प्रतिनिधित्वक प्रमाण नहि। पुरुष कथनकर्ता स्त्रीक पक्षमे बोलि सकैत छथि, मुदा स्त्रीक अपन शब्द आ निष्कर्षक समय हुनका द्वारा नियंत्रित सेहो रहि सकैत अछि।

समीक्षाक अगिला गम्भीर स्तर एहन प्रश्नसँ खुलैत अछि : कखन स्त्री मात्र शिकायत करैत छथि, कखन स्वतन्त्र निर्णय लैत छथि, कखन हुनकर कथन बीचमे रोकल जाइत अछि, आ कखन कथाक नैतिक समाप्ति हुनक आवाजकेँ सुनि कऽ बदलैत अछि? अलग विधामे एहि प्रश्नक अलग रूप होएत। मौनकेँ सदा प्रतिरोध घोषित करब वा हर वाणीकेँ मुक्ति मानब—दुनू एकहि प्रकारक सरलीकरण थिक।

२४. जल, भूमि आ वातावरण : सौन्दर्यसँ आजीविका धरि

गामक इनार, पोखरि, रौदी, शीतलहरी, महिष, नदीक कात आ खेतक रखवाली—ई सभ विवरण ग्रामीण परिवेशक प्रत्यक्षता बनबैत अछि। कवितामे ऋतु कखनो अनुभूति, कखनो आर्थिक संकट अछि। आत्मकथामे पशुपालन आ कपड़ा धोबाक श्रम संसाधनसँ जुड़ल अछि। 'ओगरबाह'मे कृषि-भूमि वृद्ध श्रमिकक जीवनक क्षेत्र अछि। एहि परस्पर सम्बन्धकेँ परखैत काल पर्यावरण केवल हरियर दृश्य नहि, श्रम-सम्बन्धक वस्तुगत शर्त बनैत अछि।

एतय सावधानी जरूरी अछि। मूल कृतिमे जे जल-स्रोतक विवरण उपस्थित अछि, ओ स्वतः प्रत्येक स्थानपर जाति-आधारित जलनिषेधक प्रमाण नहि। ई विशेष प्रश्न उठाओल जा सकैत अछि, मुदा उत्तर रचनाक साक्ष्य पर निर्भर रहत। ठाकुरक आलोचनामे सामाजिक सिद्धान्तकेँ पाठमे उपस्थित ठोस विवरणक संग जोड़बाक प्रयत्न तब प्रभावकारी बनैत अछि जखन सिद्धान्त कथा पर हावी नहि होइत।

ग्राम्य पर्यावरणक एक दोसर रूप स्मृति अछि—'अपन गाँव'क मनोरम छवि आ 'राजा अओर परजा'क पुरान समयक आदर्शीकरण। एहि स्मृतिक मूल्य ओकर

भावनात्मक सत्य अछि; मुदा असमानता आ श्रमक ऐतिहासिक अवस्थाकेँ ढाँकि देलासँ रोमानी ग्रामचित्र बनैत अछि। आलोचना प्राकृतिक सौन्दर्य, आर्थिक निर्भरता आ सामाजिक अधिकारक बीच एहि अन्तरकेँ बचाबैत अछि।

२५. भाषा आ विधा : प्रथम-पुरुष, लोकगीत, संवाद आ तर्क

पाँच खण्ड पाँच तरहक कथन-विन्यास अपनबैत अछि। आत्मकथामे 'हम' अनुभवक क्रम जोड़ैत अछि। कवितामे ध्वनि, आवृत्ति, निमन्त्रण आ दृश्य अर्थक गति बनबैत अछि। विहनि कथामे संवाद घटना उत्पन्न करैत अछि। लघुकथामे वस्तु, छोट दृश्य, मौन आ एकालाप प्रभाव पैदा करैत अछि। विचार-बिन्दुमे लोकस्मृति आ नैतिक घोषणा तर्कक स्थान लैत अछि। एहि भिन्नता बुझने साहित्यिक मूल्यांकन सटीक बनैत अछि।

साफीक भाषा समाजक बोलचालसँ पोषित अछि। ओकरा औपचारिक गद्यक निर्मित साँचे मे जबरदस्ती ढाललासँ लोकरस घटि सकैत अछि; मुदा लोकभाषा हेबाक नामपर अनावश्यक पुनरावृत्ति, ढीला तर्क अथवा एकरेखीय पात्रक परीक्षण रोकल नहि जाए। भाषा केवल शुद्ध-अशुद्धक विवाद नहि; ओ सम्बन्ध, समय, काम, भय आ इच्छाक सामाजिक क्रिया अछि। ठाकुरक अध्ययन विविध खण्डमे एहि तथ्यकेँ अलग-अलग उदाहरणसँ उद्घाटित करैत अछि।

रचनाक छोट आकार अथवा सरल शब्द ओकर साहित्यिक मूल्यकेँ स्वतः कम नहि करैत। तथापि साहित्यिकता केवल ई कहबो नहि जे लेखक वंचित समुदायसँ छथि। साहित्यिक उपलब्धि ओ ठाम देखल जाइत अछि जतय छोट भाषा एक जटिल अनुभव खोलैत अछि—एक पएरक सहारे उपचार-यात्रा, अन्नमे मजदूरी, दुआरि पर बहस, भातक लालसा अथवा मोलतोलक शुभाशंसापूर्ण शब्द। रूप आ अनुभवक एहि मिलनमे कृतिक विशिष्टता अछि।

अष्टम विभाग : समेकित सम्पादकीय निर्णय

२६. गजेन्द्र ठाकुरक आलोचनाक उपलब्धि आ रहि गेल प्रश्न

एहि पाँच अध्ययनक पहिल उपलब्धि व्यापक पाठ-निष्ठा अछि। आत्मकथाक सूक्ष्म जीवनविवरण, अट्ठाइस कविता, तीन विहनि कथा, दू लघुकथा आ एक विचार-रचनाकेँ स्वतंत्र ढंगसँ पढ़बाक प्रयास अपनमे साहित्यिक श्रमक उदाहरण अछि। दोसर उपलब्धि प्रमाणक प्रकार चिह्नबाक सावधानी अछि : लोकविश्वास आ तथ्य, पात्रक कथन आ सामाजिक इतिहास, साहित्यिक बिम्ब आ वास्तविक घटना, आलोचकक अनुमान आ मूल पाठक विवरण—ई अन्तर निरन्तर उभरैत अछि।

तेसर उपलब्धि कृतिक समाजधर्मी स्वरकेँ कलात्मक प्रश्नसँ जोड़नाइ अछि। श्रमिकक जीवनक गरिमा देखबामे भाषा आ संरचनाक परीक्षा छूटल नहि; स्त्री-स्वरक प्रशंसा करैत ओकर मौनक उल्लेखो भेल; दलित अस्मिताक ऐतिहासिक महत्त्व स्वीकार करैत 'पहिल' होएबाक ग्रन्थसूचीगत दावापर सावधानी सेहो राखल गेल। एकरा कारण ई अध्ययन केवल अभिनन्दन-पत्र नहि बनैत, साहित्यिक आलोचनाक कार्य करैत अछि।

सीमा सेहो अछि। अनेक उपविभागमे समान सावधानी दोहराओल गेल अछि, जाहिसँ तर्कक प्रवाह कतहु मन्द होइत अछि। किछु ठाम सिद्धान्तक नाम वा तुलनात्मक सन्दर्भक विस्तार वास्तविक भाषिक निकटपाठक स्थान घेरैत अछि। आत्मकथा आ आन विधाक बीच अन्तर्वर्ती सम्बन्ध विशाल सम्भावना रखैत अछि; तथापि एक संयुक्त तुलनात्मक रूपरेखा आरो सघन बनाओल जा सकैत छल। एहि सम्पादकीय पुनर्पाठमे अन्न, स्त्रीक श्रम, दलान, न्याय आ विधागत कथनकेँ एही कारण साझा सूत्रक रूपमे रखल गेल अछि।

२७. इतिहासक मान्यता आ साहित्यिक मूल्यमापनक परस्पर सम्बन्ध

मैथिली साहित्येतिहासमे साफीक कृति एक सामाजिक अनुभवक नव सार्वजनिक उपस्थिति बनि सामने अबैत अछि। धोबी समुदाय, बाल्यश्रम, औपचारिक

शिक्षाक बाधा, प्रवासी जीवन, बहुविधात्मक रचना आ लोकबोलीक माध्यमसँ एक अलग अनुभव साहित्यिक पाठक अधिकार माँगैत अछि। एहि अधिकारक अर्थ ई नहि जे लेखकक प्रत्येक विचार अन्तिम सत्य अछि; उलट ई अर्थ अछि जे हुनकर लेखन साहित्यिक परीक्षणक समान मानक पर पढ़ल जाएत। न अवमानना, न अन्धप्रशंसा—दुनूसँ बाहर आलोचनाक क्षेत्र निर्मित होइत अछि।

'पहिल दलित आत्मकथा' सम्बन्धी प्रकाशकीय पहचान मैथिली साहित्यक उपेक्षित इतिहासक पुनःपठनक प्रश्न उठबैत अछि। मुदा ऐतिहासिक मान्यता लेल सूची, तिथि, पूर्ववर्ती लेखन आ पाठ-संस्करणक व्यवस्थित साक्ष्य आवश्यक रहत। एहि सावधानीसँ आत्मकथाक जीवन-सत्यक शक्ति कम नहि होइत। साफीक कथनक केन्द्रीय अर्थ एतय अछि जे बाधित जीवनक भीतर अपन भाषा प्राप्त कऽ मनुष्य स्वयं अपन अनुभव सार्वजनिक करैत अछि।

एकरे संग पोथीक अनेक विधा लेखकक एकरेखीय पहिचानकेँ प्रश्न बनबैत अछि। कविता कखनो लोकरीतिक आलोचना करैत अछि, कखनो परम्पराक रक्षा। विहनि कथा आरोपक विरोध करैत अछि, मुदा विवाह-व्यवस्थाक सहज सहमति सेहो देखबैत अछि। लघुकथामे स्त्रीक कठोर प्रतिवाद अछि, विचारगद्य मे पुरान संरक्षकक करुणा प्रति आकांक्षा। ई असंगति साहित्यक वास्तविक ऐतिहासिक जीवनक हिस्सा अछि, त्रुटि लुकेबाक विषय नहि।

२८. अन्तिम साहित्यिक निर्णय : असमाप्त समाजक पाँच स्वरसंगति

'नित नवल सन्दीप कुमार साफी'क पाँच अध्ययन एकटा एहन पोथीक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि जाहिमे सामाजिक सम्मान आ रोजक निर्वाहक संघर्ष परस्पर गूँथल अछि। आत्मकथा अपन व्यक्ति-साक्ष्य दैत अछि; कविता गामक शब्द आ दृश्यक बहुवचन खोलैत अछि; विहनि कथा अफवाह, गृहसत्ता आ विवाह-सौदाक तनाव देखबैत अछि; लघुकथा श्रम करनिहारक भूख आ स्त्रीक परिश्रमक असमान अधिकारकेँ मूर्त बनबैत अछि; विचार-बिन्दु न्यायकेँ करुणा आ अधिकारक बीच ठाढ़ करैत अछि।

गजेन्द्र ठाकुरक समीक्षासभक महत्त्व एहिमे अछि जे ओ सामाजिक अनुभूतिक सम्मानक संग साहित्यिक शिल्प, साक्ष्य आ वैचारिक अन्तर्विरोधक परीक्षा करैत छथि। पुनरुक्ति अथवा कतिपय अतिविस्तारक सीमाक बादो एहि अध्ययनसभसँ पाठकक समक्ष पाँच विधाक स्वतंत्र प्रश्न खुलैत अछि। आलोचनाक वास्तविक फल एतए कोनो एक अन्तिम प्रशंसा नहि; पाठककेँ अधिक ठोस, असुविधाजनक आ बहुपक्षीय प्रश्न पूछबाक सामर्थ्य देनाइ अछि।

अन्ततः साफीक कृतिक सबसे उपयोगी साहित्यिक अर्थ ओकरा एक निर्विवाद प्रतीक बनाबयमे नहि, ओकर आवाजक विशिष्टता बुझेबामे अछि। धोब-धुआइनक अन्न-मजदूरी सँ लऽ दलानक गप, पुतोहुक प्रतिवाद आ अधिकारविहीन परजाक भूख धरि साहित्य ओहि संसारकेँ भाषा दैत अछि जकर अनुभव अनेक बेर दोसराक इतिहासमे गौन होइत अछि। एहन पाठक आलोचना काव्यशास्त्र आ सामाजिक इतिहासक परस्पर उत्तरदायित्वक उपक्रम अछि। पाँचू खण्डक संयुक्त पाठ एहि उत्तरदायित्वकेँ खुलल रखैत अछि।

सन्दर्भ-विवरण

साफी, सन्दीप कुमार। 'बैशाखमे दलानपर'। दिल्ली : श्रुति प्रकाशन, प्रथम संस्करण, २०१४।

ठाकुर, गजेन्द्र। 'नित नवल सन्दीप कुमार साफी : बैशाखमे दलानपरक पाँच खण्डक साहित्यिक समीक्षा'। विदेह, २०२७।

ठाकुर, गजेन्द्र। 'आत्मकथा खण्डक सम्पादकीय टिप्पणी'। अन्तर्गत : साफी, 'बैशाखमे दलानपर', २०१४।

लिंबाळे, शरणकुमार। 'Towards an Aesthetic of Dalit Literature: History, Controversies and Considerations'। अनुवाद : आलोक मुखर्जी। ओरिएण्ट लॉन्गमैन, २००४।

रेगे, शर्मिला। 'Writing Caste/Writing Gender: Reading Dalit Women's Testimonios'। जुबान, २००६।

आंबेडकर, भीमराव रामजी। 'Annihilation of Caste'। १९३६।

स्कॉट, जेम्स सी.। 'The Moral Economy of the Peasant: Rebellion and Subsistence in Southeast Asia'। येल यूनिवर्सिटी प्रेस, १९७६।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–८७

एहि खण्डमे गजेन्द्र ठाकुरक ‘नित नवल सन्दीप कुमार साफी’मे सङ्कलित पाँच आलोचनात्मक अध्ययनक सम्पादकीय पुनर्पाठ अछि। समीक्षाधीन पोथी ‘बैशाखमे दलानपर’क आत्मकथा, कविता, विहनि कथा, लघुकथा आ विचार-बिन्दु खण्ड छथि।

जाति, श्रम, शिक्षा, प्रवास, स्त्रीक स्वर, अन्नक असमान अधिकार, लोकविश्वास आ ग्राम्य न्याय एहि अध्ययनक केन्द्रीय प्रश्न छथि। साहित्यिक रूप, कथन-शैली, आलोचनात्मक प्रमाण आ सामाजिक अनुभूतिक अन्तर्विरोधकेँ अलग-अलग परखल गेल अछि।

मूल पाठक कथन, विस्तृत समीक्षाक स्थापना आ सम्पादकीय मूल्यांकनक अन्तर सुरक्षित राखि समेकित साहित्यिक निर्णय प्रस्तुत अछि।

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

विदेह

विदेह डिजिटल संग्रह

© 2027 Gajendra Thakur / Preeti Thakur